अप्रैल की एक सुखद सुबह सौ प्रतिशत सम्पूर्ण लड़की को देखने पर

(अनूदित , अप्रकाशित , जापानी कहानी)

मूल कथा : हारुकी मुराकामी
अनुवाद : सुशांत सुप्रिय

अप्रैल की एक सुखद सुबह टोक्यो के फ़ैशन-परस्त हराजूकू इलाक़े की एक तंग गली में मैं सौ प्रतिशत सम्पूर्ण लड़की की बग़ल से गुज़रता हूँ ।

आपको सच बताता हूँ, वह दिखने में उतनी सुंदर नहीं है। भीड़ में वह अलग-से दिखे, वह ऐसी नहीं है। उसने जो कपड़े पहने हुए हैं, वे भी विशिष्ट नहीं हैं। वह उतनी युवा भी नहीं है - वह लगभग तीस वर्ष की होगी, और आप उसे उस अर्थ में ' लड़की ' भी नहीं कह सकते। किंतु फिर भी मैं पचास गज की दूरी से यह जान गया हूँ कि वह मेरे लिए सौ प्रतिशत सम्पूर्ण लड़की है । जैसे ही मेरी निगाह उस पर पड़ती है , मेरे हृदय में एक हलचल होने लगती है , और मेरा मुँह किसी रेगिस्तान की तरह सूख जाता है।

सम्भवत: आपको भी कोई विशेष प्रकार की लड़की पसंद होगी - वह जिसके टखने पतले हों, या आँखें बड़ी हों, या उँगलियाँ मनोहर हों, या आप बिना किसी विशेष कारण के ऐसी लड़कियों के प्रति आकर्षित हो जाते हों जो अपना भोजन समाप्त करने में समय लेती हैं। ज़ाहिर है, मेरी भी अपनी पसंद हैं। कभी-कभी किसी रेस्तराँ में मैं अपने-आप को अपने बग़ल की मेज पर मौजूद लड़की को ग़ौर से देखता हुआ पाता हूँ क्योंकि मुझे उसकी नाक का आकार पसंद है।

लेकिन कोई भी इस बात को लेकर अड़ नहीं सकता कि उसकी सौ प्रतिशत सम्पूर्ण लड़की को किसी ख़ास तरह के अनुरूप ही होना चाहिए। हालाँकि मुझे नाक पसंद है, किंतु मुझे उसकी नाक का आकार याद नहीं। यहाँ तक कि मुझे यह भी याद नहीं कि उसकी नाक थी भी या नहीं । मुझे बस एक ही बात याद है : वह बला की ख़ूबसूरत नहीं थी। यह अजीब है।

"कल एक गली में मैं सौ प्रतिशत सम्पूर्ण लड़की के बग़ल से गुज़रा "- मैं किसी से कहता हूँ ।

"अच्छा ? " वह कहता है।- "वह ख़ूबसूरत रही होगी। "

"नहीं, ऐसा तो नहीं था ।"

"तो फिर वह उस तरह की लड़की होगी जिन्हें तुम चाहते हो।"

"मुझे पता नहीं । मुझे उसके बारे में कुछ भी याद नहीं आ रहा — यहाँ तक कि उसकी आँखों या उसके उरोजों का आकार भी याद नहीं आ रहा । "

"यह तो अजीब बात है । "

"हाँ , यह अजीब है । "

"तो फिर तुमने क्या किया ? " ऊबते हुए वह पूछता है , " क्या तुमने उससे बात की ? या उसका पीछा किया ? "

" नहीं । केवल सड़क पर उसके बग़ल से गुज़रा ।"

वह चल कर पूरब से पश्चिम की ओर जा रही है, जबकि मैं पश्चिम से पूरब की ओर जा रहा हूँ। यह वाक़ई अप्रैल की एक सुखद सुबह है।

काश, मैं उससे बात कर पाता । आधे घंटे की बातचीत काफ़ी होगी ; उससे उसके बारे में पूछूँगा, उसे अपने बारे में बताऊँगा, और यह भी बताऊँगा कि दरअसल मैं क्या करना चाहता हूँ । मैं उसे भाग्य की जटिलताओं के बारे में बताऊँगा जिसकी वजह से हम दोनों 1981 की एक सुखद सुबह हराजूकू इलाक़े की एक गली में एक-दूसरे के बग़ल से गुज़र रहे हैं। यह तो निश्चित रूप से उत्साहित करने वाले रहस्य से भरी हुई बात होगी। जैसे एक प्राचीन घड़ी तब टिक्-टिक् कर रही हो जब पूरे विश्व में शांति हो।

आपस में बात करने के बाद हम कहीं दोपहर का भोजन ले सकते हैं। शायद हम वूडी ऐलेन की कोई फ़िल्म भी साथ-साथ देखने चले जाएँ या किसी होटल में थोड़ी शराब पीने के लिए रुक जाएँ। यदि क़िस्मत ने साथ दिया तो कौन जाने , हम हमबिस्तर भी हो जाएँ।

मेरे हृदय के द्वार पर सम्भावनाएँ दस्तक दे रही हैं। अब हम दोनों के बीच की दूरी कम हो कर महज़ पंद्रह गज़ रह गई है ।

मैं उससे कैसे बात करूँ ? मैं उसे क्या कहूँ ?

"नमस्ते ! क्या आप मुझसे बात करने के लिए आधे घंटे का समय निकाल सकती हैं ? "

बकवास । ऐसा कहते हुए मैं किसी बीमा एजेंट की तरह लगूँगा ।

"क्षमा करें ! क्या आपको पड़ोस में स्थित रात भर खुली रहने वाली किसी सफ़ाई-संस्था की जानकारी होगी ? "

नहीं। यह भी उतना ही हास्यास्पद होगा। एक तो मेरे पास धुलने के लिए दिए जाने वाले गंदे कपड़े नहीं हैं। फिर ऐसी पंक्ति भला किस पर प्रभाव डालेगी।

शायद सीधी-सादी सच्चाई से काम बन जाए। " नमस्ते ! आप मेरे लिए सौ प्रतिशत सम्पूर्ण लड़की हैं । "

नहीं । वह मेरी बात पर यक़ीन नहीं करेगी । माफ़ कीजिए , वह कह सकती है , मैं आप के लिए सौ प्रतिशत सम्पूर्ण लड़की हो सकती हूँ, पर आप मेरे लिए सौ प्रतिशत सम्पूर्ण लड़का नहीं हैं। यह हो सकता है। और यदि मैंने खुद को ऐसी स्थिति में पाया तो मैं टूट कर बिखर जाऊँगा। मैं इस सदमे से कभी नहीं उबर पाऊँगा। मेरी उम्र बत्तीस साल है , और बढ़ती उम्र का सामना शिष्टता से करना चाहिए।

हम फूल बेचने वाली एक दुकान के सामने से गुज़रते हैं। गरम हवा का एक छोटा-सा झोंका मेरी त्वचा को छू जाता है। डामर गीला है और मेरी नासिकाओं में गुलाब की सुगंध प्रवेश करती है। मैं उस लड़की से बात करने की हिम्मत नहीं जुटा पाता। उसने एक सफ़ेद स्वेटर पहना हुआ है, और अपने दाएँ हाथ में उसने एक कड़क सफ़ेद लिफ़ाफ़ा पकड़ा हुआ है जिसमें डाक-टिकट का नहीं लगा होना ही एकमात्र कमी है। अच्छा , तो उसने किसी को पत्र लिखा है। शायद उसने यह पत्र लिखने में पूरी रात लगा दी हो ।